International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(1): 142-145
Received: 01-01-2023
Accepted: 05-02-2023

चन्द्रेश कुमार
शोध छात्र, शिक्षा विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. पतंजलि मिश्र
प्राचार्य, आदर्श शिक्षा महाविद्यालय, पुरैना, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
चन्द्रेश कुमार
शोध छात्र, शिक्षा विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों में व्यावसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

चन्द्रेश कुमार, डॉ. पतंजलि मिश्र

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों में व्यावसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों में व्यावसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में रीवा जिला के प्रत्येक विकासखण्ड से 04 शासकीय एवं 04 अशासकीय परिवेश के कुल 72 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में से न्यादर्श का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि के आधार पर लिया गया है। तत्पश्चात् चयनित विद्यालयों के प्राचार्यो से सम्पर्क कर उपकरण प्रशासन की स्वीकृति प्राप्त कर तथा स्वीकारोक्ति के उपरांत निर्धारित तिथियों पर उपकरण प्रशासित किए गए है। प्रत्येक विद्यालय से 06 शिक्षक (02 विज्ञान, 02 कला एवं 02 वाणिज्य अर्थात प्रत्येक संकाय से एक महिला शिक्षक एवं 01 पुरुष शिक्षक) कुल 432 शिक्षकों का चयन न्यादर्श हेतु लिया गया है। शोध क्षेत्र में छात्रों की प्रगति, संवेगात्मक संतुलन, छात्र अनुशासन, जिज्ञासा प्रवृत्ति बढ़ाने पर पुरुष व महिला शिक्षको का उत्तरदायित्व बराबर पाया गया है। अतः उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

कूटशब्दः रीवा जिला, उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय, पुरुष एवं महिला शिक्षक, व्यावसायिक सन्तुष्टि

1. प्रस्तावना

शिक्षक या गुरु शब्द स्वयं में उत्तरदायित्व को परिभाषित करता है। विभिन्न कालों में शिक्षक की उत्तरदायिता का स्वरुप भिन्न रहा है। वैदिक काल में आचार संबंधित शिक्षा देना तथा शिक्षण के समय वाक्मन्, विचार, स्मृति, चिंतन तथा अन्य सामाजिक क्रियाओं को अपने विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करना ही शिक्षकों की जिम्मेदारी थी। मध्यकाल में शिक्षक की उत्तरदायिता केवल बादशाह के प्रति मानी जाती थी, आधुनिक काल में जब शिक्षा अंग्रेजी शासन के अधीन थी, तो शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य शासन व्यवस्था में सहायता करना था। किन्तु वर्तमान में शिक्षकों की उत्तरदायिता आज शिक्षकों के कार्य मूल्यांकन से संबंधित हो गयी है। शिक्षा व्यवस्था की सफलता या असफलता का काफी कुछ दायित्व शिक्षकों पर निर्भर करता है। नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत "अध्यापकों की उत्तरदायिता" को एक विचारणीय विषय माना गया है। दक्षता, व्यावसायिकता तथा निष्ठा की मांगे शिक्षकों पर एक बहुत अहम् दायित्व सौंपती है।

शिक्षा प्रक्रिया का कोई भी स्तर हो, एक शिक्षक की भूमिका प्रत्येक स्तर पर महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा प्रक्रिया के प्रत्येक स्तर पर अध्यापक की भूमिका ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' का उद्देष्य पूरा करने में महत्वपूर्ण होती है। बच्चों में जीवन मूल्यों के विकास हेतु शिक्षक में निम्नांकित गुणों का होना आवश्यक होता है– भरोसेमंदी, विश्वसनीयता, गहराई, निश्चिंतता, परवाह करना, चरित्र निर्माण का अहसास, निष्ठा, उत्तरदायित्व, वफादारी, ईमानदारी, साहस आदि। आखिर क्यों होता है एक शिक्षक विद्यालय में? दिलाना इसका उत्तर है – समय–समय पर विद्यार्थियों को याद दिलाना कि किसे करना है? कब करना है? क्या करना है? कितना करना है? क्यों करना है? आदि। शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया का सच्चा सूत्रधार है। उसके व्यक्तित्व का बालकों पर अमिट प्रभाव पड़ता है। वह उनके भावी जीवन की नींव रखता है। वह नई पीढ़ी का शिल्पकार होता है। कोमल आयु तथा भावुक बच्चों को एक आदर्श नागरिक के रुप में रुपान्तरण करने की क्षमता अध्यापक में आवश्यक है। वह नए विचारों का वाहक तथा अग्रदूत है। वास्तव में शिक्षक सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था की धुरी है। शिक्षण व्यवसाय एक समर्पण एवं मिशन है। अध्यापन तथा अध्ययन एक योजनाबद्ध प्रक्रिया है। अतः इस प्रक्रिया की सभी बारीकियों का ज्ञान शिक्षक को होना चाहिए। समाज के अपेक्षित रूपांतरण में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों में व्यावसायिक सन्तुष्टि का आंकलन कर तथा ऐसे सुझावशोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य शासन द्वारा कठिनाइयों को दूर कर विकसित करने पर समर्थ हो सकता है।

व्यवसाय से संबंधित वांछित और अवांछित अनुभवों का संतुलन एवं संयोग का परिणाम है। बालक के व्यक्तित्व का विकास अध्यापन और शिक्षक की व्यावसायिक सन्तुष्टि पर निर्भर करता है। किसी भी विद्यालय का भवन, पाठ्यक्रम तथा पर्यावरण कितना भी प्रभावशाली क्यों न हो, जब तक शिक्षक कर्त्तव्यनिष्ठ तथा उत्तरदायी नहीं होगे, विद्यालय की उन्नति तथा शिक्षण स्तर ऊपर नही उठ सकता। नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में कदम उठाये गये जिनमें से शिक्षकों के व्यावसायिक सन्तुष्टि की विषय विचारणीय है। अतः आज के परिप्रेक्ष्य में इस पर विचार करना समीचीन प्रतीत होता है।

3. उद्देश्य
अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि का विद्यार्थियों के प्रति तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि का अभिभावकों के प्रति तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि का विद्यालय के प्रति तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि का समाज के प्रति तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ
"उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि में सार्थक अंतर नहीं होता है।"

5. शोध समस्या का सीमांकन
प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला रीवा है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुलियान, नईगढ़ी, हनुमना, मऊगंज, गंगेव, त्योंथर, जवां एवं सिरमौर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय सम्मिलित किए गए है।

5.1 समष्टि व प्रतिदर्श
प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों में व्यावसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में रीवा जिला के प्रत्येक विकासखण्ड से 04 शासकीय एवं 04 अशासकीय परिवेश के कुल 72 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में से न्यादर्श का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि के आधार पर लिया गया है। तत्पश्चात् चयनित विद्यालयों के प्राचार्यो से सम्पर्क कर उपकरण प्रशासन की स्वीकृति प्राप्त कर तथा स्वीकारोक्ति के उपरांत निर्धारित तिथियों पर उपकरण प्रशासित किए गए है। प्रत्येक विद्यालय से 06 शिक्षक (02 विज्ञान, 02 कला एवं 02 वाणिज्य अर्थात प्रत्येक संकाय से एक महिला शिक्षक एवं 01 पुरुष शिक्षक) कुल 432 शिक्षकों का चयन न्यादर्श हेतु लिया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक रूप में उपयोगी होगा।

6. अध्ययन विधि
- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण
डॉ. मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित शिक्षकों के व्यवसाय सन्तुष्टि मापनीय का प्रयोग किया गया है। यह मापनी मानकीकृत है। इसमें कुल मिलाकर 52 कथन है। मापनी के मानकीकरण की दिषा में उसकी वैधता और विश्वसनीयता का परीक्षण किया गया। मापनी की स्वाभाविक वैधता बहुत ही संतोशजनक प्रतीत हुई। जैसा कि डॉ. मीरा दीक्षित का कथन है कि उन्होंने इस परीक्षण के अंग्रेजी और हिन्दी दानों रूपान्तरों की विश्वसनीयता निकाली। अंग्रेजी रूपान्तर की विश्वसनीयता 0.92 तथा हिन्दी की विश्वसनीयता 0.93 पायी गयी।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा
पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से अग्रवाल, निधि, सत्तर, अब्दुल एवं जैन, मनीषा (2020)[1], अग्रवाल, निशी (2008)[2], बसु, एस. (2011)[3], चमण्डूस्वरी, एस. (2009)[4], पाठक, पी.डी (2007)[5], मिश्रा, रंजना (1993)[6], गुप्ता, रंजना एवं मिश्रा, आरती (2012)[7] शुक्ल, प्रमोद एवं जय सिंह (2019)[8], सिंह, प्रदीप कुमार एवं जय सिंह (2019)[9] व सिंह, ममता एवं डॉ. पतंजलि मिश्र (2021)[10] ने शोध विधि एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. रीवा जिले का सामान्य परिचय
जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना

जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18⁰ उत्तरी अक्षांश से 25⁰ उत्तरी अक्षांश तथा 81.2⁰ पूर्वी देक्षांश से 82.18⁰ पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1 : "उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि में सार्थक अंतर नहीं होता है।"

तालिका 1 : उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि का सांख्यिकीय विश्लेषण

उत्तरदायिता आयाम	लिंग	शिक्षक संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य	सार्थकता	
विद्यार्थियों के प्रति	पुरुष	216	30.16	7.24	1.82	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है
	महिला	216	31.38	6.66		0.01	
अभिभावकों के प्रति	पुरुष	216	32.08	5.04	1.86	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है
	महिला	216	31.15	5.34		0.01	
विद्यालय के प्रति	पुरुष	216	46.36	5.96	0.66	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है
	महिला	216	45.98	6.04		0.01	
समाज के प्रति	पुरुष	216	23.54	7.68	1.99	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है
	महिला	216	28.88	6.26		0.01	

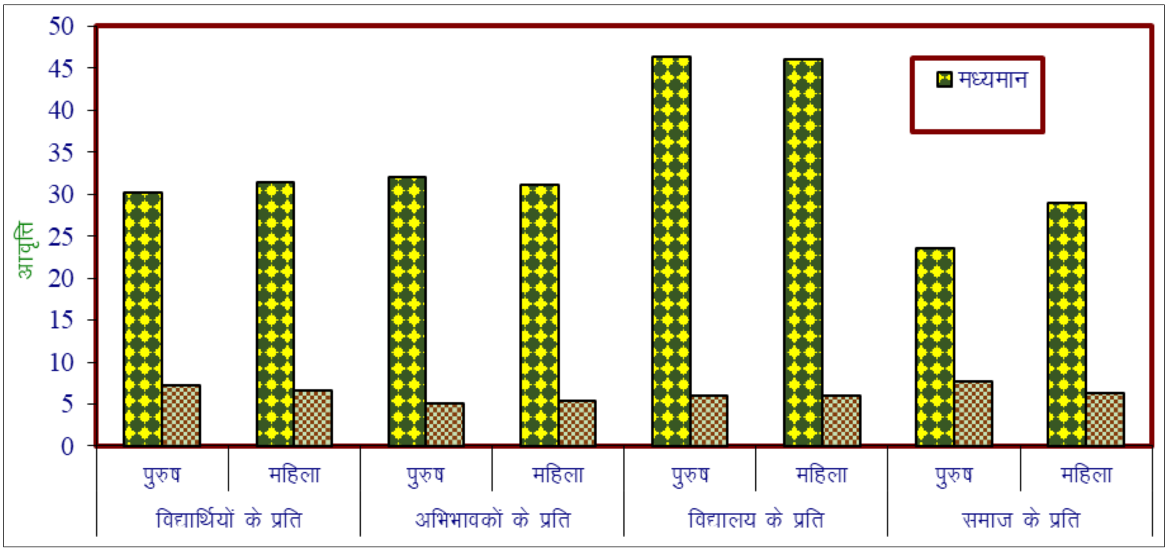

आरेख 1 : शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि का आरेखीय निरूपण

11. विश्लेषण

उपरोक्त सारणी क्रमांक 5.4 मे न्यादर्श में चयनित उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के पुरुष शिक्षकों की विद्यार्थियों के प्रति उत्तरदायित्व में सार्थकता का औसत उपलब्धि 30. 16 है तथा मानक विचलन 7.24 है और महिला शिक्षकों की विद्यार्थियों के प्रति उत्तरदायित्व में सार्थकता का औसत उपलब्धि 31.38 है तथा मानक विचलन 6.66 है।

शोध क्षेत्र के पुरुष शिक्षकों की अभिभावकों के प्रति उत्तरदायित्व में सार्थकता का औसत उपलब्धि 32.08 है तथा मानक विचलन 5.04 है और महिला शिक्षकों की अभिभावकों के प्रति उत्तरदायित्व में सार्थकता का औसत उपलब्धि 31.15 है तथा मानक विचलन 5.34 है।

शोध क्षेत्र के पुरुष शिक्षकों की विद्यालय के प्रति उत्तरदायित्व में सार्थकता का औसत उपलब्धि 46.36 है तथा मानक विचलन 5.96 है और महिला शिक्षकों की विद्यालय के प्रति उत्तरदायित्व में सार्थकता का औसत उपलब्धि 45.98 है तथा मानक विचलन 6.04 है।

शोध क्षेत्र के पुरुष शिक्षकों की समाज के प्रति उत्तरदायित्व में सार्थकता का औसत उपलब्धि 23.54 है तथा मानक विचलन 7.68 है और महिला शिक्षकों की समाज के प्रति उत्तरदायित्व में सार्थकता का औसत उपलब्धि 28.88 है तथा मानक विचलन 6.26 है।

12. व्याख्या

430 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.33 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.64 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान विद्यार्थियों के प्रति 1.82, अभिभावकों के प्रति 1. 86, विद्यालय के प्रति 0.66 और समाज के प्रति 1.99 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। यह तथ्य स्पष्ट करते है कि ये प्रदत्त स्पष्ट करते हैं कि छात्रों की प्रगति, संवेगात्मक संतुलन, छात्र अनुशासन, जिज्ञासा प्रवृत्ति बढ़ाने पर पुरुष व महिला शिक्षको का उत्तरदायित्व बराबर पाया गया है। अतः उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि में सार्थक अंतर नहीं होता है।

13. निष्कर्ष

- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि का विद्यार्थियों के प्रति उत्तरदायित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि का अभिभावकों के प्रति उत्तरदायित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि का विद्यालय के प्रति उत्तरदायित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों की लिंगभेद के संदर्भ में व्यावसायिक सन्तुष्टि का समाज के प्रति उत्तरदायित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

14. सन्दर्भ

1. अग्रवाल, निधि, सत्तर, अब्दुल एवं जैन, मनीषा, पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन, Int. J Ad. Social Sciences. 2020;8(4):173-180.
2. अग्रवाल, निशीः जालौन जनपद के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध (शिक्षा शास्त्र) बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी, 2008।
3. बसु, एस.: माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2011 जनवरी–जून;30(1):34–40.
4. चमण्डूस्वरी, एस.: शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि और व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन, एजूट्रेक्स, 2009, फरवरी;8(6):29–31.
5. पाठक, पी.डी – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2007.
6. मिश्रा, रंजना, उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं की शैक्षिक रूचियों का अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, इलाहाबादः इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 1993।
7. गुप्ता, रंजना एवं मिश्रा, आरतीः जनपद मैनपुरी के माध्यमिक स्तर के पब्लिक विद्यालय और सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, एशियन जनरल ऑफ एजूकेशन रिसर्च एण्ड टैक्नॉलोजी, 2012, 2(1)।
8. शुक्ल, प्रमोद एवं जय सिंहः रीवा जिल में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी की उपलब्धता का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Advanced Research and Development. 2019 March;4(2):53-55.
9. सिंह, प्रदीप कुमार एवं जय सिंहः रीवा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन International Journal of Advanced Research and Development. 2019; March;4(2):47-49.
10. सिंह, ममता एवं डॉ. पतंजलि मिश्र (2021). रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मध्य उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Advanced Academic Studies. 2021;3(3):247-250.